Name.....

www.creativeworksheetshub.com

गिलहरी की कहानी

वनवास के समय जब रावण, माता सीता का अपहरण करके लंका ले जाता है। माता सीता को रावण के चंगुल से बचाने के लिए भगवान राम अपनी बंदरों और भालुओं की सेना के साथ मिल कर समुद्र पर पत्थरों का पुल बनाते है। ताकि उस पुल से समुद्र को पार कर लंका पहुँच सके। वहीं पर एक छोटी-सी गिलहरी भी अपने मुँह में छोटे-छोटे कंकर-पत्थर उठा कर पुल पर रखे दो बड़े पत्थरों के बीच रखती जा रही थी। एक बन्दर ये सब देख रहा था। वो गिलहरी का मजाक उड़ाता है जिस कारण गिलहरी बहुत दुःखी होकर रोने लगती है।

भगवान राम दूर से ये सब देख रहे होतें हैं। कुछ देर बाद गिलहरी बंदरों से परेशान होकर भगवान राम से,सभी बंदरों की शिकायत करती है। भगवान राम अपनी सेना के सभी सदस्यों को बुला कर दिखाते है कि कैसे गिलहरी द्वारा लाये गए छोटे-छोटे कंकर-पत्थर, उनके द्वारा लाये गए दो बड़े पत्थरों को जोड़ने का काम कर रहे हैं। साथ ही सभी को यह भी समझाया कि उनके कार्य के समान ही गिलहरी का कार्य भी अत्यंत सराहनीय और महत्वपूर्ण है।

भगवान राम ने बड़े प्यार से गिलहरी की पीठ पर हाथ फेरा।भगवान राम के अँगुलियों के निशान गिलहरी की पीठ पर बन गए। तभी से गिलहरियों के शरीर पर सफ़ेद रंग की धारियाँ पाई जाती हैं।